

असाध्य वीणा कविता की समीक्षा कीजिए।

परिचय

असाध्य वीणा कविता: आधुनिक हिंदी कविता के एक अत्यंत महत्वपूर्ण मोड़ पर लिखी गई रचना है, जिसके रचयिता हैं सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'। यह कविता न केवल एक कलात्मक अभिव्यक्ति है, बल्कि आध्यात्मिक और दार्शनिक गहराई का भी दस्तावेज़ है। यह कविता उनके संग्रह 'आँगन के पार द्वार' (1961) में संकलित है। अज्ञेय की यह रचना समकालीन कविता की उस दिशा को दर्शाती है, जहां कविता केवल वर्णन नहीं, एक साधना बन जाती है।

असाध्य वीणा कविता का कथा-सार

कविता का केंद्रबिंदु है एक 'वीणा', जिसे 'असाध्य वीणा' कहा जाता है। यह कोई साधारण वाद्य नहीं है, बल्कि एक अत्यंत दुर्लभ और जटिल वीणा है, जिसे एक साधक 'वज्रकीर्ति' ने तपस्या और साधना से तैयार किया था। यह वीणा एक ऐसे वृक्ष से बनी थी जिसकी जड़ें पाताल तक और शाखाएं आकाश तक फैली थीं। यह वीणा न केवल निर्माण में असाध्य थी, बल्कि इसे बजाना भी उतना ही कठिन था।

राजा के दरबार में अनेक प्रसिद्ध कलाकारों को आमंत्रित किया गया, परंतु कोई भी इस वीणा को बजाने में सफल नहीं हो सका। अंत में 'प्रियंवद' नामक एक वादक को बुलाया गया, जो न तो प्रसिद्ध था, न ही स्वयं को कलाकार मानता था। वह साधक था, जिसने न वीणा को बजाने की कोशिश की, न कोई प्रदर्शन किया। वह ध्यानस्थ होकर आत्मसमर्पण की स्थिति में पहुंच गया। इसी स्थिति में वीणा स्वयं बोल उठी। उसकी ध्वनि ने उपस्थित लोगों को अलग-अलग अनुभूतियों से भर दिया – किसी को हर्ष, किसी को दुख, किसी को प्रेम और किसी को भक्ति का अनुभव हुआ।

प्रतीकों और बिंबों का विश्लेषण

वीणा

वीणा इस कविता का केंद्रीय प्रतीक है। यह न केवल एक वाद्ययंत्र है, बल्कि यह जीवन, आत्मा, प्रकृति, कला और साधना का प्रतीक है। यह 'असाध्य' है क्योंकि इसे केवल कौशल या प्रदर्शन से नहीं, बल्कि पूर्ण आत्मसमर्पण और एकाग्रता से ही समझा और अनुभव किया जा सकता है।

प्रियंवद

प्रियंवद एक ऐसे कलाकार का प्रतीक है जो साधक है। वह प्रदर्शन से दूर है, दिखावे से अलग, और आत्मा से जुड़ा हुआ है। वह बताता है कि कला साधना है, न कि महज़ मनोरंजन। उसकी मौन

उपस्थिति और वीणा के साथ उसका एकात्म भाव यह सिखाता है कि महानता पाने के लिए 'करने' की नहीं, 'होने' की आवश्यकता है।

ध्वनि और मौन

इस कविता में मौन और ध्वनि का द्वंद्व अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रियंवद कुछ नहीं करता, केवल मौन होता है, परंतु उसी मौन से वीणा स्वयं बज उठती है। यह मौन साधना का, आत्म-निवेदन का, और अस्तित्व की गहराइयों में उतरने का प्रतीक है। ध्वनि जो उत्पन्न होती है, वह किसी एक रस या अर्थ में सीमित नहीं, बल्कि श्रोताओं के आंतरिक भावों के अनुरूप भिन्न-भिन्न है। यह दिखाता है कि कला की अनुभूति प्रत्येक व्यक्ति के भीतर के भावों से जुड़ी होती है।

भाषा और शैली

कविता की भाषा अत्यंत संस्कृतनिष्ठ है, परंतु उसकी गंभीरता और औदात्य इस भाषा में गहराई जोड़ते हैं। अज्ञेय ने इसे गद्यात्मक छंद में लिखा है, जिससे कविता का प्रवाह स्वाभाविक लगता है। शैली वर्णनात्मक, प्रतीकात्मक और चिंतनशील है। अज्ञेय ने शब्दों का चयन अत्यंत सावधानी से किया है, जिससे प्रत्येक पंक्ति में अर्थ की परतें दिखाई देती हैं।

दार्शनिक पक्ष

‘असाध्य वीणा’ केवल एक कविता नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक यात्रा है। इसमें जैन-बौद्ध दर्शन की झलक मिलती है, जहां मौन साधना से ही आत्मज्ञान संभव होता है। यह कविता उपनिषदों की उस परंपरा से जुड़ती है जहां कहा गया है कि “वाणी वहां नहीं पहुंच सकती जहां आत्मा निवास करती है।” प्रियंवद का मौन, उसका आत्मसमर्पण और अंततः वीणा का अपने-आप बज उठना – यह सब जीवन की उस ऊंची अवस्था की ओर संकेत करता है जहां मनुष्य प्रकृति से एकात्म हो जाता है।

कला की परिभाषा और पुनर्व्याख्या

इस कविता के माध्यम से अज्ञेय कला की नई परिभाषा प्रस्तुत करते हैं। वे कहते हैं कि कला केवल निपुणता या तकनीकी दक्षता नहीं, बल्कि एक साधना है, एक आत्मिक अनुभव है। वीणा को साधने वाले केवल वे नहीं जो ऊंगलियों से रचना करते हैं, बल्कि वे भी हैं जो मौन होकर आत्मा से संवाद करते हैं। प्रियंवद इस नए दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है।

वर्तमान संदर्भ में कविता की प्रासंगिकता

आज के युग में, जब कला का एक बड़ा हिस्सा बाजार और लोकप्रियता से जुड़ा है, 'असाध्य वीणा' जैसी रचना हमें यह याद दिलाती है कि सच्ची कला प्रदर्शन से नहीं, आत्मा से उपजती है। यह कविता आज भी उतनी ही प्रासंगिक है क्योंकि यह आत्म-अन्वेषण, साधना और मौन की शक्ति की बात करती है – ऐसे तत्व जो आधुनिक जीवन की चकाचौंध में खो गए हैं।

समीक्षक दृष्टि से मूल्यांकन

आलोचकों ने इस कविता को आधुनिक हिंदी कविता की श्रेष्ठतम प्रतीकात्मक रचनाओं में गिना है। इसकी शैली, भाषा और गूढ़ार्थ ने इसे विशिष्ट बना दिया है। रामविलास शर्मा जैसे आलोचकों ने इसे भारतीय सौंदर्यबोध और आधुनिकता का संगम माना है। वहीं कुछ आलोचक मानते हैं कि इसकी जटिल भाषा इसे आम पाठकों से दूर कर देती है, परंतु यही इसकी गहराई का प्रमाण भी है।

निष्कर्ष

'असाध्य वीणा' एक ऐसी कविता है जो पाठक को केवल एक कथा नहीं सुनाती, बल्कि उसे अपने भीतर झांकने को प्रेरित करती है। यह कविता एक साधना है – नायक का नहीं, पाठक का। अज्ञेय ने इस कविता के माध्यम से यह बताया कि सच्चा सौंदर्य वह है जो मौन में छुपा है, और सच्ची कला वह है जो आत्मा को स्पर्श करती है। यह कविता आज भी उन लोगों को मार्गदर्शन देती है जो कला को केवल तकनीक नहीं, तपस्या मानते हैं।